महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

बी.ए. द्वितीय वर्ष (सेमेस्टर-IV) परीक्षा, जून-2025 (नियमित)

विषय: राजस्थान का इतिहास (HISTORY OF RAJASTHAN) - मॉडल पेपर 2

पूर्णांक: 70 समय: 3 घंटे

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के दो भाग हैं: भाग-अ और भाग-ब।
2. भाग-अ के सभी दस प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अधिकतम 50 शब्दों में दीजिए। (10 x 2 = 20 अंक)
3. भाग-ब में कुल दस प्रश्न हैं। किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक इकाई से कम-से-कम एक प्रश्न का चयन करना अनिवार्य है। उत्तर सीमा 400 शब्दों से अधिक। (5 x 10 = 50 अंक)

भाग-अ (अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न) (20 अंक)

(उत्तर सीमा: अधिकतम 50 शब्द प्रति प्रश्न)

1. गणेश्वर सभ्यता की दो प्रमुख विशिष्टताएँ क्या हैं?
2. चौहान वंश के संस्थापक का नाम और उसकी राजधानी का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
3. राव मालदेव और शेरशाह सूरी के बीच लड़े गए निर्णायक युद्ध का नाम और महत्व बताइए।
4. महाराणा राज सिंह प्रथम को 'राजसिंह' क्यों कहा जाता था?
5. 'भगत आंदोलन' के प्रवर्तक कौन थे और इसका मुख्य उद्देश्य क्या था?
6. 1857 की क्रांति के समय कोटा में विद्रोहियों का नेतृत्व किसने किया?
7. अर्जुन लाल सेठी कौन थे और उनकी प्रसिद्ध टिप्पणी क्या थी?
8. 'डाबरा काण्ड' (Dabra Incident) क्या था?
9. राजपूताना में ब्रिटिश सत्ता का सर्वोच्च प्रतिनिधि कौन था?
10. वृहत् राजस्थान की राजधानी 'जयपुर' क्यों बनाई गई?

भाग-ब (निबंधात्मक/दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) (50 अंक)

(किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए, प्रत्येक इकाई से कम-से-कम एक प्रश्न अनिवार्य। उत्तर सीमा: 400 शब्दों से अधिक)

इकाई-I: प्राचीन और प्रारंभिक मध्यकालीन राजस्थान

1. अजमेर के चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) की उपलब्धियों का विस्तृत मूल्यांकन कीजिए। एक शासक और साहित्यकार के रूप में उनका क्या योगदान था?
2. राजस्थान के इतिहास लेखन में पुरातात्विक स्रोतों (गणेश्वर, बैराठ) और साहित्यिक स्रोतों (पृथ्वीराज रासो, हम्मीर महाकाव्य) के महत्व का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

इकाई-II: मध्यकालीन राजस्थान और मुगल संबंध

3. मारवाड़ के शासक राव मालदेव के उत्कर्ष और पतन की विवेचना कीजिए। शेरशाह सूरी के साथ उसके संघर्ष का क्या परिणाम हुआ?

4. मुगल सम्राट औरंगजेब की नीतियों के संदर्भ में मारवाड़ के राठौड़ शासक जसवंत सिंह और वीर दुर्गादास राठौड़ के संघर्ष एवं योगदान का विस्तृत मूल्यांकन कीजिए।
5. अलाउद्दीन खिलजी के चित्तौड़ आक्रमण (1303 ई.) के कारणों और परिणामों पर एक विस्तृत निबंध लिखिए।

इकाई-III: आधुनिक राजस्थान और स्वतंत्रता संग्राम

6. 1818 ई. की संधियों से पूर्व मराठा हस्तक्षेप ने राजस्थान की रियासतों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को किस प्रकार प्रभावित किया?
7. राजस्थान के प्रमुख क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानियों (अर्जुन लाल सेठी, केसरी सिंह बारहठ, जमनालाल बजाज) के योगदान और राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी भूमिका का विस्तृत वर्णन कीजिए।
8. आदिवासी और भील आंदोलनों (एकी आंदोलन, भगत आंदोलन) के स्वरूप, उद्देश्य और परिणामों का विश्लेषण कीजिए।

इकाई-IV: स्वतंत्रता संग्राम, प्रजामंडल और एकीकरण

9. राजस्थान में महिला स्वतंत्रता सेनानियों (जैसे- अंजना देवी चौधरी, रमा देवी, काली बाई) के योगदान पर एक विस्तृत निबंध लिखिए।
10. राजस्थान के एकीकरण में शामिल होने में जोधपुर और बीकानेर रियासतों की भूमिका का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

मॉडल प्रश्न-पत्र 2 के विस्तृत उत्तर और विश्लेषण

भाग-अ के उत्तर (अति लघु उत्तरात्मक)

1. गणेश्वर सभ्यता की दो प्रमुख विशिष्टताएँ क्या हैं? गणेश्वर सभ्यता (सीकर) को ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी कहा जाता है। दो विशिष्टताएँ हैं: (1) यहाँ से बड़ी मात्रा में शुद्ध तांबे के उपकरण (तीर, भाले, मछली पकड़ने के कांटे) प्राप्त हुए हैं, जिनमें तांबे की शुद्धता 99% तक है। (2) यह एक गैर-हड़प्पाकालीन ताम्र संस्कृति थी और हड़प्पा सभ्यता को तांबे की आपूर्ति करती थी।
2. चौहान वंश के संस्थापक का नाम और उसकी राजधानी का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। चौहान वंश के संस्थापक वासुदेव चौहान थे, जिन्होंने लगभग 551 ई. में चौहान राज्य की नींव रखी। उनकी प्रारंभिक राजधानी अहिच्छत्रपुर थी, जिसे वर्तमान में नागौर के नाम से जाना जाता है।
3. राव मालदेव और शेरशाह सूरी के बीच लड़े गए निर्णायक युद्ध का नाम और महत्व बताइए। निर्णायक युद्ध गिरि सुमेल/जैतारण का युद्ध (1544 ई.) था। इस युद्ध में शेरशाह सूरी ने मालदेव को कूटनीति से पराजित किया। महत्व: यह युद्ध मारवाड़ की स्वतंत्रता के अंत का प्रतीक बना, हालाँकि शेरशाह ने कहा था कि "मैं मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिंदुस्तान की बादशाहत खो देता।"
4. महाराणा राज सिंह प्रथम को 'राजसिंह' क्यों कहा जाता था? महाराणा राज सिंह (1653-1680 ई.) को उनकी धार्मिक सहिष्णुता, शौर्य और औरंगजेब की दमनकारी नीति के विरोध के कारण 'राजसिंह' कहा जाता था। उन्होंने औरंगजेब द्वारा जजिया कर लगाए जाने का विरोध किया और मेवाड़ में श्रीनाथजी (नाथद्वारा) तथा द्वारकाधीश (कांकरोली) के मंदिरों का निर्माण करवाकर धार्मिक संरक्षण दिया।
5. 'भगत आंदोलन' के प्रवर्तक कौन थे और इसका मुख्य उद्देश्य क्या था? भगत आंदोलन के प्रवर्तक गोविंद गुरु (गोविंद गिरि) थे। इसका मुख्य उद्देश्य भील समुदाय में सामाजिक और धार्मिक सुधार लाना, उन्हें मांसाहार, शराब और अंधविश्वास से दूर रखना तथा उन्हें हिंदू धर्म की मुख्यधारा से जोड़कर अंग्रेजों और सामंती शोषण के विरुद्ध संगठित करना था।
6. 1857 की क्रांति के समय कोटा में विद्रोहियों का नेतृत्व किसने किया? कोटा में 1857 की क्रांति का नेतृत्व दो प्रमुख व्यक्तियों ने किया: (1) वकील जयदयाल और (2) रिसालदार मेहराब खान। उन्होंने कोटा के पॉलिटिकल एजेंट मेजर बर्टन की हत्या कर दी और छह महीने तक शहर पर नियंत्रण रखा।

7. **अर्जुन लाल सेठी कौन थे और उनकी प्रसिद्ध टिप्पणी क्या थी?** अर्जुन लाल सेठी (जयपुर) राजस्थान के एक प्रमुख क्रांतिकारी थे, जिन्होंने क्रांति के लिए लोगों को प्रेरित किया। उनकी प्रसिद्ध टिप्पणी थी: "यदि मैं नौकरी करूँगा, तो अंग्रेजों को बाहर निकालने का काम कौन करेगा?" उन्होंने तत्कालीन जयपुर रियासत के महाराजा से दीवान पद का प्रस्ताव ठुकराते हुए यह बात कही थी।
8. **'डाबरा काण्ड' (Dabra Incident) क्या था?** डाबरा काण्ड 13 मार्च 1947 को डीडवाना, जोधपुर रियासत में हुआ था। यह घटना मारवाड़ लोक परिषद के कार्यकर्ताओं और किसानों की एक सभा पर जागीरदार और रियासती सेना के हमले से संबंधित है, जिसमें कई किसान शहीद हुए थे। यह मारवाड़ में सामंत विरोधी संघर्ष का प्रतीक बना।
9. **राजपूताना में ब्रिटिश सत्ता का सर्वोच्च प्रतिनिधि कौन था?** राजपूताना में ब्रिटिश सत्ता का सर्वोच्च प्रतिनिधि एजेंट टू गवर्नर जनरल (A.G.G.) होता था। 1832 ई. में इस पद की स्थापना की गई थी, और इसका मुख्यालय अजमेर था। 1857 की क्रांति के समय जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस ए.जी.जी. थे।
10. **वृहत् राजस्थान की राजधानी 'जयपुर' क्यों बनाई गई?** वृहत् राजस्थान (चतुर्थ चरण, 1949) की राजधानी जयपुर को बनाया गया क्योंकि यह सबसे बड़ा, सबसे विकसित और सबसे अधिक राजस्व वाला शहर था। पी. सत्यनारायण राव समिति की सिफारिश पर जयपुर को राजधानी बनाया गया, जबकि जोधपुर को उच्च न्यायालय दिया गया।

भाग-ब के विस्तृत उत्तर (निबंधात्मक/दीर्घ उत्तरीय)

इकाई-I: प्राचीन और प्रारंभिक मध्यकालीन राजस्थान

1. अजमेर के चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) की उपलब्धियों का विस्तृत मूल्यांकन कीजिए। एक शासक और साहित्यकार के रूप में उनका क्या योगदान था?

I. परिचय: चौहान शक्ति का चरमोत्कर्ष

विग्रहराज चतुर्थ (शासनकाल लगभग 1150-1164 ई.) चौहान वंश के सबसे महान शासकों में से एक थे। उनका शासनकाल सपादलक्ष (सांभर-अजमेर क्षेत्र) के चौहानों के लिए राजनीतिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों से 'स्वर्ण युग' कहलाता है। उन्होंने न केवल अपने साम्राज्य का विस्तार किया बल्कि स्वयं एक उत्कृष्ट कवि और विद्वान भी थे।

II. विग्रहराज चतुर्थ की सैन्य एवं राजनीतिक उपलब्धियाँ

विग्रहराज चतुर्थ ने अपनी शक्ति और वीरता से चौहान राज्य को एक विशाल साम्राज्य में बदल दिया, जिसका विस्तार दिल्ली तक था।

1. तोमर शासकों पर विजय और दिल्ली पर अधिकार:
    - उनकी सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक उपलब्धि दिल्ली के तोमर शासकों को पराजित करना और दिल्ली पर अधिकार स्थापित करना था।
    - शिवालिक स्तम्भ शिलालेख (दिल्ली-शिवालिक स्तम्भ लेख, 1163 ई.) इस बात का प्रमाण है कि विग्रहराज ने उत्तर में हिमालय तक और विंध्य तक अपनी सत्ता स्थापित की।
    - दिल्ली पर अधिकार से चौहान राज्य को सामरिक और आर्थिक शक्ति मिली।
2. गजनी के शासकों का दमन:
    - उन्होंने पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्रों में गजनी के मुस्लिम शासकों के अवशेषों को सफलतापूर्वक दबाया।
    - दिल्ली शिवालिक शिलालेख में उन्हें "म्लेच्छों का दमनकर्ता" कहा गया है। इस प्रकार, उन्होंने भावी तुर्की आक्रमणों के विरुद्ध एक मजबूत दीवार खड़ी की।
3. अन्य शासकों पर विजय:
    - उन्होंने गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल को भी पराजित किया, हालाँकि यह संघर्ष लगातार चलता रहा।
    - उन्होंने आर्यावर्त के शासकों को हराया और 'महाराजाधिराज परमेश्वर' की उपाधि धारण की।

4. साम्राज्य का विस्तार और सुशासन:
    - विग्रहराज चतुर्थ के अधीन, चौहान साम्राज्य दिल्ली, पंजाब के कुछ हिस्से, राजस्थान और पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों तक विस्तृत था, जिसने उन्हें उत्तर भारत की सबसे प्रमुख शक्ति बना दिया।
    - उन्होंने एक कुशल प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की और अपने राज्य में शांति और समृद्धि सुनिश्चित की।

III. विग्रहराज का साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान

विग्रहराज चतुर्थ की महानता केवल युद्ध के मैदान तक सीमित नहीं थी; वे स्वयं एक महान साहित्यकार और कला के संरक्षक थे।

1. महान नाटककार:
    - विग्रहराज ने संस्कृत भाषा में 'हरिकेली नाटक' की रचना की। यह एक उत्कृष्ट नाटक है, जो 'किरातार्जुनीयम्' की कथा पर आधारित है।
    - इस नाटक के कुछ अंश अजमेर में स्थित अढाई दिन का झोंपड़ा (जो मूलतः संस्कृत विद्यालय था) की दीवारों पर उत्कीर्ण हैं, जो उनके साहित्यिक कौशल का प्रमाण है।
2. कला और स्थापत्य का संरक्षण:
    - सरस्वती कंठाभरण संस्कृत विद्यालय (अजमेर): उन्होंने अजमेर में एक भव्य संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया, जिसे बाद में कुतुबुद्दीन ऐबक ने अढाई दिन का झोंपड़ा नामक मस्जिद में बदल दिया।
    - बीसलसर झील और बीसलपुर नगर: उन्होंने अपने नाम पर बीसलपुर नामक नगर बसाया और वहीं बीसलसर झील (टोंक) का निर्माण करवाया, जो आज भी सिंचाई और जल आपूर्ति का महत्वपूर्ण स्रोत है।
3. विद्वानों को संरक्षण:
    - उनके दरबार में प्रसिद्ध विद्वान सोमदेव रहते थे, जिन्होंने 'ललित विग्रहराज' नामक नाटक की रचना की। यह नाटक विग्रहराज चतुर्थ और इंद्राणी की काल्पनिक प्रेम कथा पर आधारित है और उनकी सैन्य विजयों का भी वर्णन करता है।

IV. मूल्यांकन और निष्कर्ष

विग्रहराज चतुर्थ का शासनकाल चौहानों के लिए राजनीतिक विस्तार, सैन्य सफलता और सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक है। उन्होंने अपनी तलवार के बल पर म्लेच्छों को रोका और अपनी लेखनी से संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया। उनके शासन में चौहान राज्य एक क्षेत्रीय शक्ति से एक साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में उभरा, जिसने उनके परपोते पृथ्वीराज चौहान तृतीय के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया। विग्रहराज चतुर्थ को इतिहास में एक 'विद्वान विजेता' के रूप में याद किया जाता है।

इकाई-II: मध्यकालीन राजस्थान और मुगल संबंध

4. मुगल सम्राट औरंगजेब की नीतियों के संदर्भ में मारवाड़ के राठौड़ शासक जसवंत सिंह और वीर दुर्गादास राठौड़ के संघर्ष एवं योगदान का विस्तृत मूल्यांकन कीजिए।

I. परिचय: मुगल-मारवाड़ संबंधों का संकट

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ शासकों और मुगलों के बीच संबंध अकबर के समय से स्थापित थे, लेकिन सम्राट औरंगजेब (1658-1707 ई.) के शासनकाल में ये संबंध शत्रुता में बदल गए। यह संघर्ष दो प्रमुख हस्तियों—महाराजा जसवंत सिंह और उनके निधन के बाद वीर दुर्गादास राठौड़—के योगदान से जाना जाता है।

II. महाराजा जसवंत सिंह और औरंगजेब (1658-1678 ई.)

महाराजा जसवंत सिंह मुगल साम्राज्य के एक प्रमुख मनसबदार और सेनापति थे, लेकिन धर्म के प्रति औरंगजेब की कट्टरता ने उनके संबंधों को तनावपूर्ण बनाए रखा।

1. उत्तराधिकार का युद्ध (1658 ई.):
    - जसवंत सिंह ने शुरू में औरंगजेब के विरुद्ध शाहजहाँ के बड़े पुत्र दारा शिकोह का समर्थन किया।

- धर्मत का युद्ध (1658): इस युद्ध में उन्होंने औरंगजेब के विरुद्ध दारा की ओर से युद्ध किया, लेकिन उनकी पराजय हुई। इस घटना ने औरंगजेब और जसवंत सिंह के बीच अविश्वास की नींव डाली।

2. सैन्य सेवा और उपेक्षा:
    - हार के बावजूद, औरंगजेब ने कूटनीतिक रूप से जसवंत सिंह को उच्च मनसबदारी और विभिन्न सूबों की सूबेदारी प्रदान की (जैसे- गुजरात, दक्कन, काबुल)।
    - जसवंत सिंह ने अपने जीवन का अधिकांश समय मुगल सेवा में रहते हुए उत्तर-पश्चिमी सीमा (अफगानिस्तान) पर बिताया, जहाँ 1678 ई. में उनकी जमरूद (अफगानिस्तान) में मृत्यु हो गई।

III. मारवाड़ का उत्तराधिकार संघर्ष और दुर्गादास की भूमिका (1679-1707 ई.)

जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद, औरंगजेब ने राजपूत नीति में बड़ा बदलाव किया और मारवाड़ को सीधे मुगल नियंत्रण में लाने का प्रयास किया, जिससे वीर दुर्गादास राठौड़ का उदय हुआ।

A. संघर्ष का कारण (खालसा घोषित करना):

1. उत्तराधिकार विवाद: जसवंत सिंह की मृत्यु के समय उनका कोई जीवित उत्तराधिकारी नहीं था। बाद में उनकी दो रानियों ने पुत्रों को जन्म दिया, जिनमें अजीत सिंह बच गए।
2. औरंगजेब का हस्तक्षेप: औरंगजेब ने मारवाड़ को खालसा (सीधे शाही नियंत्रण) घोषित कर दिया और अजीत सिंह को मान्यता देने से इनकार कर दिया। उसका उद्देश्य मारवाड़ को एक वफादार अधीनस्थ राज्य बनाना था, न कि एक स्वायत्त राजपूत राज्य।

B. दुर्गादास राठौड़ का संघर्ष (30 वर्षीय युद्ध):

1. अजीत सिंह का संरक्षण: दुर्गादास राठौड़ ने जोधपुर राजपरिवार के वफादार सेवक के रूप में राजकुमार अजीत सिंह को औरंगजेब के चंगुल से बचाया। उन्होंने अजीत सिंह को गुप्त स्थानों पर रखकर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की।
2. राठौड़-मेवाड़ गठबंधन: दुर्गादास ने मेवाड़ के महाराणा राज सिंह प्रथम के साथ गठबंधन किया। इस गठबंधन ने औरंगजेब के विरुद्ध एक शक्तिशाली प्रतिरोध खड़ा किया, जिसे राठौड़-मेवाड़ गठबंधन कहा जाता है।
3. गुरिल्ला युद्ध: दुर्गादास ने 1679 ई. से औरंगजेब की मृत्यु (1707 ई.) तक लगभग 30 वर्षों तक मुगलों के विरुद्ध गुरिल्ला (छापामार) युद्ध का सफल संचालन किया। उन्होंने मुगलों की विशाल सेना को लगातार परेशान किया और मारवाड़ की संप्रभुता को बनाए रखा।
4. राजकुमार अकबर का विद्रोह: दुर्गादास ने औरंगजेब के विद्रोही पुत्र राजकुमार अकबर को संरक्षण दिया और उसे मराठा शासक संभाजी के पास पहुँचाया। यह कदम मुगल साम्राज्य के लिए एक बड़ा राजनीतिक संकट बन गया।

IV. योगदान और मूल्यांकन

A. महाराजा जसवंत सिंह का योगदान:

- वे मुगल साम्राज्य के सबसे प्रभावशाली हिन्दू अधिकारियों में से एक थे।
- उन्होंने अपनी स्वायत्तता और राजपूत गौरव को बनाए रखने का प्रयास किया, भले ही उन्हें औरंगजेब के अधीन काम करना पड़ा।
- वह साहित्य और कला के संरक्षक थे, उन्होंने ब्रज भाषा में कई ग्रंथ लिखे।

B. वीर दुर्गादास राठौड़ का योगदान:

- मारवाड़ का उद्धारकर्ता: दुर्गादास को मारवाड़ के इतिहास में 'राठौड़ों का यूलिसीस' (The Ulysses of the Rathores) और 'मारवाड़ का उद्धारकर्ता' कहा जाता है। उन्होंने न केवल अजीत सिंह के जीवन की रक्षा की, बल्कि मारवाड़ की स्वतंत्रता की लौ को 30 वर्षों तक जलाए रखा।
- अखंड देशभक्ति: उनकी निष्ठा, साहस और अथक संघर्ष ने मारवाड़ को औरंगजेब की धर्मांध नीतियों के सीधे शिकार होने से बचाया।

- सफलता: 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद, अजीत सिंह अंततः जोधपुर के सिंहासन पर आरूढ़ हुए, जो पूर्णतः दुर्गादास के संघर्ष का परिणाम था।

V. निष्कर्ष: औरंगजेब की कट्टरपंथी नीतियों ने मारवाड़ को एक लंबी लड़ाई में धकेल दिया। महाराजा जसवंत सिंह ने मुगल शक्ति को अंदर से संतुलित करने का प्रयास किया, जबकि उनके बाद वीर दुर्गादास राठौड़ ने अपनी अद्वितीय देशभक्ति और छापामार युद्ध की रणनीति से मारवाड़ की स्वतंत्रता की रक्षा की। उनका संघर्ष राजस्थान के इतिहास में राजपूत शौर्य और स्वाभिमान का एक अमर अध्याय है।

इकाई-III: आधुनिक राजस्थान और स्वतंत्रता संग्राम

7. राजस्थान के प्रमुख क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानियों (अर्जुन लाल सेठी, केसरी सिंह बारहठ, जमनालाल बजाज) के योगदान और राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी भूमिका का विस्तृत वर्णन कीजिए।

I. परिचय: क्रांति की त्रिमूर्ति

राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम में ऐसे अनेक वीर हुए, जिन्होंने अपनी कलम, त्याग और बलिदान से ब्रिटिश शासन तथा रियासती निरंकुशता के विरुद्ध अलख जगाई। अर्जुन लाल सेठी, केसरी सिंह बारहठ और जमनालाल बजाज इस क्रांतिकारी और राजनीतिक आंदोलन की त्रिमूर्ति माने जाते हैं, जिन्होंने अपनी भूमिकाओं से राजस्थान को राष्ट्रीय मुख्यधारा से जोड़ा।

II. अर्जुन लाल सेठी: क्रांति का जनक (The Pioneer of Revolution)

अर्जुन लाल सेठी (1880-1941 ई.) जयपुर के निवासी थे और राजस्थान में राजनीतिक चेतना के प्रथम प्रमुख केंद्र माने जाते हैं।

1. क्रांतिकारी शिक्षा: सेठी ने अजमेर में जैन शिक्षण संस्थाएँ स्थापित कीं, जो बाहर से तो शिक्षण संस्थान थीं, लेकिन अंदर से क्रांतिकारियों के प्रशिक्षण केंद्र थीं। उन्होंने युवाओं को देशभक्ति और ब्रिटिश विरोधी भावना से ओत-प्रोत किया।
2. सरकारी नौकरी का त्याग: उन्हें जयपुर के महाराजा द्वारा दीवान पद (राज्य सेवा) की पेशकश की गई थी, जिसे उन्होंने यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया था कि "यदि अर्जुन लाल सेठी नौकरी करेगा, तो अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने का काम कौन करेगा?"
3. सशस्त्र क्रांति में भूमिका: वे बंगाल के क्रांतिकारी रास बिहारी बोस और सचिन सान्याल के निकट थे। उन्हें निमाज हत्याकांड (आरा, बिहार) मामले में फंसाया गया और उन्हें 5 वर्ष की सजा हुई, जिसके तहत उन्हें वेल्लूर (मद्रास) जेल में रखा गया।
4. योगदान: उन्होंने राजस्थान में सशस्त्र क्रांति और राजनीतिक जागृति की नींव रखी, शिक्षित वर्ग को क्रांति की ओर मोड़ा।

III. केसरी सिंह बारहठ: कवि, योद्धा और संगठनकर्ता (The Poet-Warrior)

केसरी सिंह बारहठ (1872-1941 ई.) मेवाड़ रियासत के एक प्रमुख क्रांतिकारी कवि और संगठनकर्ता थे।

1. डिंगल-पिंगल काव्य द्वारा प्रेरणा:
    - उनका सबसे बड़ा योगदान था 'चेतावनी रा चूंगट्या' (1903 ई.) नामक 13 सोरठों की रचना।
    - यह उस समय लिखा गया, जब मेवाड़ के महाराणा फतेह सिंह दिल्ली दरबार (1903) में लॉर्ड कर्जन से मिलने जा रहे थे। इस काव्य ने महाराणा को उनके पूर्वजों के गौरव की याद दिलाई, जिससे वे दिल्ली दरबार में शामिल हुए बिना ही वापस लौट आए। यह घटना मेवाड़ के सम्मान की रक्षा और ब्रिटिश विरोधी भावना का ज्वलंत उदाहरण है।
2. क्रांतिकारी नेटवर्क:
    - वे रास बिहारी बोस और मास्टर अमीर चंद जैसे अखिल भारतीय क्रांतिकारियों के संपर्क में थे। उन्होंने 'वीर भारत सभा' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की।
3. बलिदान:
    - उन्हें प्यारेलाल साधु हत्याकांड में फंसाया गया और 20 वर्ष की सजा दी गई, जिसमें उन्होंने हजारीबाग जेल (बिहार) में कठोर सजा काटी। उनका पूरा परिवार (भाई जोरावर सिंह, पुत्र प्रताप सिंह) भी क्रांति के लिए बलिदान हो गया, जिससे वे राजस्थान के इतिहास में सबसे महान बलिदानी परिवार बने।

IV. जमनालाल बजाज: गांधी के पाँचवें पुत्र और त्याग की मूर्ति (The Fifth Son of Gandhi)

जमनालाल बजाज (1889-1942 ई.) राजस्थान में राष्ट्रीय आंदोलन को आर्थिक और वैचारिक आधार प्रदान करने वाली सबसे महत्वपूर्ण हस्ती थे।

1. गांधीवाद को रियासतों में फैलाना:
    - उन्हें महात्मा गांधी ने 'गांधी के पाँचवें पुत्र' की उपाधि दी थी। उन्होंने अपने धन और प्रभाव का उपयोग करते हुए गांधीवादी रचनात्मक कार्यों (खादी, ग्रामोद्योग, अस्पृश्यता निवारण) को राजस्थान के कोने-कोने तक पहुँचाया।
2. प्रजामंडल आंदोलन में भूमिका:
    - वह जयपुर प्रजामंडल के संस्थापक थे और बाद में इसके अध्यक्ष भी बने। उन्होंने अन्य रियासती प्रजामंडलों को भी आर्थिक और संगठनात्मक समर्थन दिया।
    - उन्होंने रियासतों में उत्तरदायी शासन की मांग को एक राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया।
3. राय बहादुर की उपाधि का त्याग:
    - ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 'राय बहादुर' की उपाधि दी थी, जिसका उन्होंने असहयोग आंदोलन (1921) के दौरान त्याग कर दिया। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति अपना पूर्ण समर्थन व्यक्त किया।

V. निष्कर्ष: अर्जुन लाल सेठी ने राजस्थान में क्रांतिकारी चेतना को जगाया; केसरी सिंह बारहठ ने अपने काव्य और संगठन से शासकों को जगाया और बलिदान की पराकाष्ठा स्थापित की; जबकि जमनालाल बजाज ने गांधीवादी सिद्धांतों और अपने धन से पूरे आंदोलन को राष्ट्रीय स्वरूप और आवश्यक संसाधन प्रदान किए। इन तीनों क्रांतिकारियों और नेताओं ने मिलकर राजस्थान की जनता को स्वतंत्रता संग्राम की मुख्यधारा से जोड़कर आधुनिक राजस्थान की नींव रखी।

इकाई-IV: स्वतंत्रता संग्राम, प्रजामंडल और एकीकरण

10. राजस्थान के एकीकरण में शामिल होने में जोधपुर और बीकानेर रियासतों की भूमिका का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

I. परिचय: बड़े राज्यों की जटिलता

राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया में छोटी रियासतों को शामिल करना आसान था, लेकिन जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और उदयपुर जैसी बड़ी रियासतों को भारतीय संघ में विलय करना सबसे बड़ी चुनौती थी। जोधपुर और बीकानेर की भूमिकाएं इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण हैं कि एकीकरण में एक शासक की देशभक्ति (बीकानेर) और दूसरे की द्विधा और अनिश्चितता (जोधपुर) का कितना बड़ा अंतर था।

II. बीकानेर रियासत की अग्रणी भूमिका (The Pioneer)

बीकानेर के शासक महाराजा शार्दूल सिंह ने एकीकरण में सबसे अग्रणी और सकारात्मक भूमिका निभाई।

1. भारत में विलय की पहली घोषणा: महाराजा शार्दूल सिंह भारतीय संघ में शामिल होने वाले पहले शासक थे। उन्होंने 7 अगस्त 1947 को ही इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन (विलय पत्र) पर हस्ताक्षर कर दिए थे।
2. स्वैच्छिक और देशभक्ति पूर्ण निर्णय: शार्दूल सिंह ने भारतीय संविधान सभा की बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने सरदार पटेल के राष्ट्रवाद के आह्वान को समझा और अपनी रियासत के विशाल आकार के बावजूद, बिना किसी दबाव के भारत में विलय का निर्णय लिया।
3. अन्य शासकों को प्रेरणा: उनका यह कदम अन्य राजपूत शासकों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बना और इससे पटेल की एकीकरण की प्रक्रिया को गति मिली।

III. जोधपुर रियासत की अनिश्चितता और प्रतिरोध की भूमिका

जोधपुर के शासक महाराजा हनवंत सिंह की भूमिका शुरू में अनिश्चित और विवादस्पद थी, जिससे एकीकरण की प्रक्रिया में बाधा आई।

1. **स्वतंत्र रहने की इच्छा:** महाराजा हनवंत सिंह ने पहले स्वतंत्र रहने की इच्छा व्यक्त की। उनकी रियासत की भौगोलिक स्थिति (सिंध और पाकिस्तान की सीमा से जुड़ी) के कारण उन्हें पाकिस्तान में शामिल होने का प्रलोभन दिया गया था।
2. **मोहम्मद अली जिन्ना का प्रलोभन:** पाकिस्तान के संस्थापक **मोहम्मद अली जिन्ना** ने हनवंत सिंह को एक ब्लैंक चेक (Blank Cheque) देने, कराची बंदरगाह के उपयोग की अनुमति देने और आवश्यक सैन्य व वित्तीय सहायता देने का वादा किया था।
3. **मेनन की कूटनीति:**
   - महाराजा लगभग पाकिस्तान में शामिल होने का मन बना चुके थे, लेकिन वी.पी. मेनन ने कूटनीति का उपयोग किया।
   - मेनन ने महाराजा को यह एहसास कराया कि उनकी हिंदू बहुल जनता पाकिस्तान के साथ विलय को कभी स्वीकार नहीं करेगी और इससे रियासत में गृहयुद्ध छिड़ सकता है।
   - अंततः, सरदार पटेल और मेनन के दबाव और धमकियों के मिश्रण के कारण, महाराजा हनवंत सिंह ने अनिच्छा से 1947 में भारत में विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए।
4. **वृहत् राजस्थान में विलय:** जोधपुर का विलय (30 मार्च 1949) एकीकरण के चौथे चरण (वृहत् राजस्थान) में हुआ। इस विलय को आसान बनाने के लिए, जोधपुर को उच्च न्यायालय और अन्य प्रशासनिक संस्थानों का केंद्र बनाया गया।

IV. आलोचनात्मक मूल्यांकन (Critical Evaluation)

1. **बीकानेर (सकारात्मक):** शार्दूल सिंह की भूमिका **निस्वार्थ देशभक्ति** पर आधारित थी। उन्होंने बिना किसी शर्त या प्रलोभन के भारत की राष्ट्रीय एकता को सर्वोपरि रखा। उनका उदाहरण अन्य शासकों के मन से संदेह दूर करने में सहायक हुआ।
2. **जोधपुर (नकारात्मक):** हनवंत सिंह की भूमिका **व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा** और अवसरवादिता पर आधारित थी। उनका पाकिस्तान में शामिल होने का प्रयास भारतीय एकता के लिए एक गंभीर खतरा था। यदि जोधपुर पाकिस्तान में मिल जाता